सम्पूर्णता के लिए तीव्र पुरूषार्थ

प्रथम सप्ताह

1. स्वमान - मैं पवित्रता का फरिश्ता हूँ।

- मैं इस संसार में भगवान के साथ पवित्र धर्म की स्थापना अर्थ अवतरित हुआ हूँ... कलियुग की अपवित्रता मुझे छू भी नहीं सकती... मुझे तो सर्व आत्माओं को पवित्रता का दान देना है... पवित्रता मेरे जीवन का श्रृंगार है...।

2. योगाभ्यास :-

1. मैं परमपवित्र आत्मा हूँ...मुझसे चारों ओर पवित्र वायबेशन फैल रहे हैं.... मेरी हर कर्मेन्द्रिय तक ये पवित्र किरणें पहुंचकर मेरे सम्पूर्ण शरीर को पावन कर रहे हैं...।

2. मैं पवित्रता का पुंज हूँ... बाबा ने निरंतर मुझ पर पवित्रता की श्वेत किरणें पड़ रही है... और सारे संसार में फैलकर प्रकृति और मनुष्यात्माओं को पावन बना रही है...।

3. मैं पवित्रता का सूर्य हूँ.... मैं अंतरिक्ष में स्थित होकर सारे संसार से अपवित्रता रूपी अंधकार को दूर कर रहा हूँ... मेरे तेजोमय स्वरूप से अखिल ब्रह्माण्ड पावन हो रहा है...।

3. धारणा :- सम्पूर्ण पवित्रता

- स्वयं से बातें करें कि मेरा लक्ष्य सम्पूर्ण पवित्रता है... मैं इसे प्राप्त करके रहूंगा... मैंने भगवान से पवित्र रहने की प्रतिज्ञा की है... मैं हंसते-हंसते मर जाऊंगा लेकिन अपनी प्रतिज्ञा को नहीं तोडूंगा..।

- ये न सोचें कि मुझे पवित्र बनना है लेकिन इस सच्चाई को अंतर से स्वीकार कर लें कि मैं हूँ ही परम पवित्र आत्मा ... पवित्रता मेरा स्वधर्म है, अपवित्रता परधर्म है....।

4. चिंतन :-

- सम्पूर्ण पवित्रता क्या है ?

- पवित्रता के मार्ग में बाधक तत्व कौन-कौन से हैं ?

- स्वयं में सम्पूर्ण पवित्रता कैसे लायें ?

- सम्पूर्ण पवित्रता के लिए बाबा के महावाक्य कौन-कौनसे हैं ?

- पवित्रता पर एक कमेंट्री लिखें।

5. साधकों प्रति :- प्रिय साधकों ! बाबा का ज्ञान हमें संपूर्ण होली बनने को प्ररित करता है जिसका ही यादगार पर्व भारत में होली के रूप में मनाया जाता है। हम सभी बाबा के बच्चे विषय विकारों की होली जलाकर, प्रभु के संग ज्ञान-योग की होली खेलकर, पास्ट को 'हो ली' करके, सम्पूर्ण होली बनें थे और फिर से हमें ही बनना है। तो आईये इस मास में प्रभु के संग के रंग में रंगकर सम्पूर्ण होली बनने का दृढ़ संकल्प करें।

दूसरा सप्ताह

1. स्वमान :- मैं बाप समान स्वराज्य अधिकारी आत्मा हूँ।

बाबा ने हमें जो दो मास के लिए जो दो होमवर्क दिए हैं उनमें से एक है स्वराज्य अधिकारी बनना। यही हमारा प्रथम अध्याय है जिसकी यह नींव जितनी मजबूत होगी वही दूसरे होमवर्क (व्यर्थ से सम्पूर्ण मुक्ति) को पूर्ण कर सकेगा। तो आयें हम सभी अपने स्वराज्य के आसन पर आसीन हो जाएं क्योंकि सिंहासन पर बैठेंगे तभी सभी कर्मेन्द्रिय रूपी कर्मचारी हमारा ऑर्डर मानेंगे अन्यथा मानेंगे नहीं।

2. योगाभ्यास :-

1. इस नशे को बढ़ाएं कि मैं स्वराज्य अधिकारी हूँ... राजा हूँ.... इस देह का मालिक हूँ... सभी सूक्ष्म व स्थूल कर्मेन्द्रियां मेरे आज्ञाकारी कर्मचारी हैं... मैं जैसा आदेश देता हूँ, वे वैसा ही करते हैं... मैं बाबा की श्रीमत अनुसार अपने हर कर्मेन्द्रिय को कार्य देता हूँ और वे सभी उसी अनुसार कार्य करते हैं...।

2. जैसे ब्रह्मा बाबा रोज अपना स्वराज्य दरबार लगाया करते थे और एक-एक कर्मेन्द्रिय से बात किया करते थे, उन्हें आदेश दिया करते थे, उनके कार्यों की समीक्षा किया करते थे... वैसे ही हम भी रोज अमृतवेले और रात्रि में अपना स्वराज्य दरबार लगायें, अमृतवेले उन्हें कार्य दें और रात्रि में चेक करें कि सभी ने ठीक-ठीक कार्य किया... ?

3. ब्रह्मा बाबा ने जिस प्रकार प्रारंभ में धुन लगा दी थी कि 'मैं आत्मा हूँ... मैं आत्मा हूँ...' इसी अभ्यास ने उन्हें सहज ही स्वराज्य अधिकारी बना दिया.... हम भी इस अभ्यास को कूट-कूट कर पक्का करें....।

3. धारणा :- व्यर्थ संकल्प और व्यर्थ समय से मुक्त

- बाबा बार-बार हमें संकल्प और समय के खजाने को सफल करने की प्रेरणा दे रहे हैं। संगम के अपने इन अमूल्य खजानें को यदि हम व्यर्थ गंवायेंगे तो इसका नुकसान हमें ही भुगतना पड़ेगा। इसलिए परम सद्गुरु की आज्ञा मानें और व्यर्थ से स्वयं को पूर्णत: मुक्त करें।

4. चिंतन :-

- ज्वालामुखी योग क्या है ?

- वर्तमान समय ज्वालामुखी योग की क्यों आवश्यकता है और इसका महत्व क्या है ?

- ज्वालामुखी योग के लिए हमें किन-किन बातों पर ध्यान देना है ?

- ज्वालामुखी योग में मग्न योगी का एक शब्द चित्र बनायें ?

5. साधकों प्रति :- प्रिय साधकों ! तपस्या हर मुश्किल को आसान कर देती है। तपस्या ही हमारे जीवन का श्रृंगार है। तपस्या ही सर्व गुणों और सर्व शक्तियों को हममें भरेगी। तपस्या ही हमारी सम्पन्नता और सम्पूर्णता को समीप लायेगी। इसलिए हम अपनी तपस्या को बढ़ायें और अपने योग को ज्वालामुखी योग बनायें।

सर्वश्रेष्ठ आकर्षण

....पृष्ठ 6 का शेष

बल्कि उन द्वारा प्राप्त होने वाले आनंद में है और आत्मा वास्तव में आनंद की ओर ही आकर्षित होती है न कि किसी स्थूल अथवा सूक्ष्म विषय की ओर। यदि आकर्षण बाहरी विषयों में होता तो पहाड़ों की चोटियों पर घूमने वाला व्यक्ति कभी थककर वापिस न लौटता। परंतु विषयों का आकर्षण और मनुष्य की चंचलता तभी तक जारी रहती है जब तक उसे उनसे आनंद की अनुभूति होती रहे। स्पष्ट है कि मनुष्य सदाकाल के आनंद को प्राप्त करना चाहता है। परंतु उसको सांसारिक वस्तुओं, व्यक्तियों और विषयों द्वारा केवल अल्पकाल के आनंद की ही प्राप्ति हो पाती है। इसलिए सर्वश्रेष्ठ आकर्षण का केंद्र वही हो सकता है जिस

जयपुर। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत को ईश्वरीय संदेश देने के बाद पुष्प भेंट करते हुए ब्र.कु.सुषमा साथ में हैं ब्र.कु.चंद्रकला।

गोनियाना मण्डी (पंजाब)। गुरुद्वारा के अध्यक्ष काहन सिंह से आध्यात्मिक चर्चा करने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.रामनाथ।

बेलापूर। ब्र.कु.शुभांगी को सम्मानित करते हुए कैंसर एण्ड एसोसिएशन की अध्यक्षा डॉ.कविता कुलकर्णी, सरपंच प्रमिला कोली व कमल कोली।

बोरीवली। आध्यात्मिक मेले का उद्घाटन करते हुए फिल्म निदेशक सुभाष घई, सांसद गोपाल सेट्ठी, डॉ.उमेश ओझा, हेमेन्द्र मेहता, ब्र.कु.दिव्यप्रभा तथा अन्य।

पलक्कड। 'प्लेटिनम जुबली' कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए सांसद सफी परम्बिल, जिलाधिकारी के.वी.मोहन कुमार, फादर जोश कल्लूविल, ब्र.कु.करूणा, ब्र.कु.शीलू तथा अन्य।

ग्वालियर। एन.आर.आई.आई.टी.एम.कॉलेज के राष्ट्रीय योजना शिविर के उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए प्रो.मनोज भारद्धाज तथा मंचासीन हैं राज्य संपर्क अधिकारी डॉ.आर.के.विजय तथा ब्र.कु.ज्योति।